Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, DEC-JAN, 2021, VOL-9/43

कहानी साहित्य के विभिन्न पडावों का समीक्षात्मक अध्ययन

रमेश एस. जगताप, Ph. D.

असोसिएट प्रोफेसर, शोध मार्गदर्शक एवं विभागाध्यक्ष जी.व्ही.एस कला महाविद्यालय बामखेडा. त. त. ता. शहादा जि. नन्दूरबार ४२५४०९ महाराष्ट्र rameshjagtap296@gmail.com

Paper Received On: 15 JAN 2021
Peer Reviewed On: 18 JAN 2021
Published On: 01 FEB 2021
Content Originality & Unique: 100%

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

कहानी ' कहना' और 'सुनना' के रूप में हमेशा स्वीकार की गई है। वह कभी आख्यानक के रूप में, तो कभी जातक कथा के रूप में, तो कभी पंचतंत्र और हितोपदेश के रूप में प्रचलित थी। काल परिवर्तन के कारण उसमें अनेक मोड़ आये। हिन्दी कहानी का प्रारंभ १९०० ई. के आस पास 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन से ही होता है।

''कहानी के आधुनिक स्वरूप का प्रारंभिक निर्माण तथा विकास पश्चिम में हुआ था। इसलिए इस प्रभाव को ग्रहण करना स्वाभाविक ही था। ''[१] इस दृष्टि से इन कहानियों के कथ्य और शिल्प पर भी प्रश्न चिह लगाया जा सकता है। इस काल में तीन प्रकार की कहानियाँ लिखी गई – रूपान्तरित कहानी', 'अनुवादित कहानी' और 'मौलिक कहानी।

हिन्दी की प्रथम कहानी विवादास्पद है, क्योंकि अपनी–अपनी दृष्टि से मौलिक कहानी साबित करने का प्रयास अनेक विद्वानों का रहा है। इस सम्बन्ध में आ. रामचंद्र शुक्ल जी ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी किशोरीलाल गोस्वामी की इन्दुमती' को कहा है।[२] डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल – ग्यारह वर्ष का समय' कहानी को पहली कहानी मानते हैं।[३] देवी प्रसाद वर्माजी, माधवरव सप्रे की कहानी सुभाषित रत्न' प्रथम मौलिक कहानी मानते हैं।[४] शिवदान सिंह चौहान ने जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम' कहानी को प्रथम कहानी का सम्मान दिया है।[५]

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा के अनुसार इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' पहली कहानी है।[६] हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार बंगमहिला की दुलाई वाली' को प्रथम कहानी माना है।[७] राजेन्द्र यादव ने गुलेरीजी की कहानी उसने कहा था' को प्रथम कहानी माना है।[८] उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि हिन्दी की पहली कहानी किसे माना जाय। यह बात विवादास्पद ही रही है।

हिन्दी की प्रथम कहानी विवादास्पद है। इस काल में रानी केतकी की कहानी—इंशाअल्ला खाँ, राजा भोज का सपना—राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द,'अदभूत अपूर्व स्वप्न—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, 'इन्दुमति—किशोरी लाल गोस्वामी, ग्यारह वर्ष का समय—रामचंद्र शुक्ल, 'दुलाई वाली—बंगमहिला पंडित और पंडितानी—गिरिजादत बाजपेयी, 'सुभाषित रत्न—माधवराव सप्रे, सुखमय जीवन', 'युद्ध का काँटा' और उसने कहा था'—चंद्रधर शर्मा गुलेरी आदि कहानियाँ इस काल ने लिखी गई।

हिन्दी कहानी का प्रारंभिक कथ्य अंग्रेजी और बंगला से प्रभावित रहा है। इन्दुमती' एक भाव प्रधान कहानी है।[९] कहानी में ऐतिहासिक वातावरण के साथ आदर्श प्रेम का वर्णन है। इन्दुमती सात्विक प्रेम की कहानी है।

माधव प्रसाद सप्रे कृत 'एक टोकरी भर मिट्टी'— विधवा की गरीबी और उससे जमींदार साहब की स्वार्थ लिप्सा की कहानी है। लेकिन अंत में हृदय परिवर्तन कर पश्चाताप का भाव प्रस्तुत किया है। 'ग्यारह वर्ष का समय में अभावग्रस्त होते भी निष्ठा और प्रेम का आदर्श प्रस्तुत हुआ है। दुलाईचाली — में यथार्थ—चोतना मनोरंजन घटना का स्वाभाविक चित्रण मिलता है। उसने कहा था— में लहनासिंह के भीतर सरदारनी के प्रति प्रेम का बीज पड़ जाता है, उसे समय की लम्बी दूरी भी कम नहीं कर पाती, क्योंकि उसका रूप अब व्यापक हो गया है। लहनासिंह अपनी बली चढाकर उस प्रेम की रक्षा करता है। संक्षेप में इस काल की कहानी के कथ्य में आदर्श प्रेम की प्रतिष्ठापना, रोचक प्रसंगों से यथार्थ चित्रग, अलौकिक घटनाओं से अंतिम । ध्येय की पूर्ति. संकेतों के माध्यम से उपदेश का स्वर है। "इस समय की कहानी का कथानक सामान्य वर्ग से न होकर विशिष्ट वर्ग से था राजा रानी कहानी के पात्र होते थे। इस युग में सामान्य जीवन की अभिव्यक्ति कम हुई है। "[१०] संक्षेप में यही कहना होगा कि प्रेमचंद पूर्व कहानी के कथ्य में कथनात्मकता, घटनात्मकता , कुतुहलता, औत्सुक्य आदि प्रधान तत्व थे। इसी आधार पर प्रेमचंद युगीन कहानी का प्रारंभ होता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रेमचंद युग

जयशंकर प्रसाद का आरंभ सन १९११ में प्रकाशित प्रथम कहानी 'ग्राम' से तथा 'अवसान' १९३५ में प्रकाशित 'सालवती' से माना जा सकता है।[११] प्रसाद ने 'छाया', 'प्रतिध्वनि' , 'आकाशदीप', 'आंधी इंद्रजाल' आदि कहानी संग्रह में ४५ के आसपास कहानियां लिखी।

प्रेमचंद का आविर्भाव कहानी क्षेत्र के लिए अवतार माना जाता है। उन्होंने उर्दू से हिंदी में आकर उपन्यासों के अलावा ३०० के करीब कहानियां लिखी । उनकी कहानियों पर युगीन प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है। इन कहानियों में ऐतिहासिक , गांधीवादी विचार दृष्टि, मनोवैज्ञानिक , रूपवादी, यथार्थवादी और आदर्शवादी आदि मुख्य कथा प्रवाह है। 'पंच– परमेश्वर' न्याय की पवित्रता में विश्वास जगाने वाली कहानी है । 'बड़े घर की बेटी' में संयुक्त परिवार के टूटने से बच जाने पर प्रसन्नता व्यक्त हुयी है। संयुक्त परिवार एक साथ –– बंधुत्व सहयोग आदि मूल्यों का सामूहिक प्रतिनिधित्व करता है, सज्जनता का दंड' में ईमानदारी का मूल्य व्यक्त हुआ है। मंत्र कहानी में परोपकार की परंपरागत अवधारणा पर जोर दिया गया है। नमक का दरोगा में स्वयं पंडित अलोपीदीन अपने को अपमानित करने वाले दरोगा साहब को अपने यहाँ नियुक्त करते हैं और उनकी ईमानदारी स्पष्ट हुई है। ईदगाह, बूढी काकी शतरंज के खिलाड़ी आदि में घटना सापेक्ष अर्तद्वन्द्र बहुत गहरा और प्रभावशाली है। पूस की रात, ठाकुर का कुओं और कफन इन कहानियों में निम्न वर्गीय जीवन की समस्याओं को गहराई में जाकर किसान, अछूत–मजदूर, क्लर्क, नेता, वेश्या आदि का यथार्थवादी चित्रण हुआ है।"[१२]

तात्पर्य कहानी के प्रारंभिक रूप में जो मनोरंजक स्वप्नकथा, राजा रानी की कहानियाँ, थी. यही प्रेमचंदजी ने कहानी को समाज के निकट लाया। कहानी मनुष्य मात्र का यथार्थ चित्रण करने लगी और समाज की इच्छा आकांक्षाओं की पूर्ति करने लगी। प्रेमचंद की कहानियाँ राष्ट्रीय आंदोलन, राजनीतिक जीवन, देशप्रेम और गाँधीवादी जीवन दर्शन से प्रभावित होकर देशी–रियासतों की समस्या, मध्यमवर्गीय जीवन, आभूषण प्रेम. पुलिस का दमन, देश की पराधीनता के साथ–साथ, अछूतोद्धार किसानों की समस्या, सूदखोरी की समस्या आदि का प्रखरता से चित्रण करती है। और इन समस्याओं को समाज और देश के सामने रखती है। प्रेमचंद का पंच–परमेश्वर' से कफन तक का रचनात्मक इतिहास युगीन परिवर्तनों का जीवन्त दस्तावेज है। सुदर्शन की कहानियों में आदर्शोन्मुच यथार्थता दिखाई देती है। 'ताई कहानी में कुंठित मातृत्व की कथा कही गई है। अलबम पं. शादीराम अभावपूर्ण पारिवारिक परिवेश में जीने

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

वाले पुरोहित की कहानी है। विश्वभरनाथ शर्मा कौशिक ने आदर्श और यथार्थ का वर्णन किया है। उनकी कहानियों में गाँव–नगर और उच्चवर्ग, सामाजिक, राजनीतिक सभी प्रकार का चित्रण किया है। ज्वालादत्त शर्मा भी सुधारवादी थे। उन्होंने व्यक्ति और पारिवारिक समस्याओं में फंसे हुए मनुष्य के संघर्ष का बखूबी वर्णन किया है। वृन्दावन लाल वर्मा जी ने ऐतिहासिक कहानियों लिखकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण किया लेकिन वर्माजी कहानी से ज्यादा उपन्यास में अधिक रुचि रखते थे और ये उसमें कामयाब भी हुए। पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र प्रेमचंद कालीन मुख्य कहानीकार रहे हैं, लेकिन उन्होंने प्रसाद और प्रेमचंद की परंपरा को अस्वीकार करते हुए उग्र रूप धारण किया। उस ने समाज की विकृतियों एवं विषमता, वर्ण–व्यवस्था, स्त्री–पुरुष के संबंध, अंधविश्वास, निर्धन, पूंजीपति आदि पर कहानियाँ लिखी है। इनकी कहानियों में नई कहानी के बीज निहित है।[१३]

प्रेमचंदोत्तर काल में समाजवादी विचारधारा की नींव यशपाल ने रखी और 'मार्क्स तथा फ्रायड के विचारों को हमारी आंतरिक क्रिया–प्रतिक्रियाओं के साथ जोड़ा। यशपाल की कहानियों में शोषक और शोषित के संघर्ष का वास्तविक चित्रण दिखाई देता है कुल मिलाकर व्यंग्य समाजवादी जीवनदृष्टि और मनोवैज्ञानिक पैठ उनकी कहानी कला के गुण है।[१४]

पूर्ववर्ती परंपरा को त्यागकर 'जैनेन्द्र', अज्ञेय एवं इलाचंद जोशी ने प्रेमचंद कथा प्रवाह को एक नया आयाम दिया है। इन कहानीकारों ने मन' को मुख्य मानकर उसका विश्लेषण किया है। पहले मानव चरित्र का विश्लेषण प्रमुख था और अब मन का विश्लेषण प्रधान हुआ। पहले मानव जीवन के रहस्यों को खोला जाता था, अब मानसिक गुत्थियों, ग्रंथियों एवं कुण्ठाओं का चित्रण मुख्य हो गया है।[१५] प्रल्हाद अग्रवाल के अनुसार ''चरित्र तथा मन:स्थिति की गूढ ग्रंथियों के विश्लेषण में ऐसे कथा विन्यास प्रस्तुत किए गए, जिनसे चरित्र संबंधी समस्त प्रेरणाएँ एक जैसी संधिस्थल पर एकत्रित हो गई जिनके सहारे उनकी मनोविश्लेषणात्मक मीमांसा हुई ।"[१६]

जैनेंद्र' की भाँति 'अज्ञेय' भी शुद्ध मनोवैज्ञानिक कथाकार है। व्यक्ति मन की जटिलताओं, अन्तर्वन्हों. संघर्षों का द्वंदो मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने में सक्षम है। अज्ञेय के आत्मकेन्द्रित कलाकार जीवन के बहुआयामी पक्ष, विभिन्न मन:स्थितियों और जीवन्त परिवेश के विशिष्ट अनुभवों को मनोवैज्ञानिक धरातल पर कहानी विधा के रूप में प्रस्तुत करके अप्रतिम सेवा की है।"[१७] अज्ञेय की कहानी में विविधता है। रोज' कहानी व्यक्ति की प्रेमयुक्त यातना को दर्शाती है। 'लेटर बॉक्स' में विषमता और व्यथा को तो

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

हजामत का साबुन में मनुष्य की असाहयता का चित्रण है। देश विभागान की त्रासदी ' मुसलिम मुसलिम भाई भाई. बदला, शरणदाता', 'लेटर बॉक्स में व्यक्त हुई। कड़िया', 'पुलिस की सीटी', 'छाया क्रांतिकारियों की जीवन गाथा है। 'रोज', हीली बोन की बतखे', 'शरणार्थी', 'मेजर चौधरी की वापसी' में व्यक्तिनिष्ठ चिन्तन चित्रित है।

इस परंपरा के एक ओर महत्वपूर्ण कहानीकार है 'इलाचंद जोशी । ये मनोवैज्ञानिक कहानीकार है। इनका मनोविश्लेषण जैनेंद्र और अज्ञेय से बहुत ज्यादा फ्रायड से प्रभावित है। नवल किशोर जी ने उनके संबंध में उचित ही कहा है कि ''उन्होंने फ्रायड को सेक्स और स्वप्न सिद्धान्तों के कुछ सूत्र लेकर केस हिस्ट्री लिखी है, कहानियाँ नही ं"[१८] मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों से संबंधित यज्ञ और आहुति', 'पागल की सफाई 'चिट्ठी– पत्री' आदि कहानियां है। "इनके पात्रों की समस्याएं तो वैचारीक है सामाजिक और शुध्द रूप से वैयक्तिक वे तो किसी ऐसी मानसिक ग्रंथि से संबंधित है, जिनकी उहापोह में पात्र छटपटाता रहता है, पर अंतत: उसे किसी सामाजिक भावना से जोड़ दिया जाता है।"[१९] अत: प्रेमचंद की परंपरा को जैनेंद्र, अज्ञेय एवं इलाचंद जोशी जी ने एक नया मोड़ दिया और कहानी को मनुष्य की आंतरिक अनुभूति से जुड़ा है।

प्रेमचंदोत्तर कहानीकारों में उपेंद्रनाथ 'अश्क'जी का नाम मार्क्सवादी लेखन में एक और महत्वपूर्ण कड़ी है । उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक कहानियां लिखी।'' उग्र की राजनीतिक कहानियों में अमानवीय रीति–रिवाजों, घिसे– पिटे मूल्य, पाखंड और मिथ्याचारों का विरोध किया गया है।"[२०]

सन ५० के बाद की कहानी :–

नई कहानी वास्तविकता है और उसका मतलब व्यक्ति समूह नहीं, वह मूल्य दृष्टि प्रतिमान और बोध है जो सारे समकालीन लेखन से सबंध है। कोई प्रवृत्ति या धारा विशेष ही नई कहानी नहीं है– वरन कथ्य और शिल्प के स्तर पर भी सारी विविधता विकास की सारी विभिन्न और विरोधी स्थितियों और नई उभरती दिशाएं सब मिलकर नई कहानी का एक स्तर बना है।"[२१] इससे यही प्रतीत होता है कि नई कहानी में नया मोड़ आया है।

सन १९५० के बाद कहानी क्षेत्र में एक नया आंदोलन चलाया गया। सर्वप्रथम दुष्यंतकुमार ने नयी कहानी : परंपरा शीर्षक में 'नयी कहानी' का प्रयोग किया पत्र–पत्रिकाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया , जिसमें श्रीपतराय की 'कहानी' (१९५६) पत्रिका भैरवप्रसाद गुप्त के नेतृत्व में प्रकाशित हुई डॉ.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

बच्चन सिंह भी नयी कहानी का प्रारंभ १९५१ में प्रकाशित शिवप्रसाद सिंह की 'दादी मां' कहानी से मानते हैं । नई कहानी आंदोलन में राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, शिवप्रसाद सिंह आदि कहानीकारों और नामवर सिंह , श्रीपतराव , भैरवप्रसाद गुप्त आदि समीक्षकों एवं संपादकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रेमचंद , यशपाल, अज्ञेय की कथा परंपरा के स्रोत से ही नई कहानी का विकास हुआ, किंतु नए मिजाज की कहानियां सन ५० के बाद ही सामने आने लगी थीं। लेकिन इस नयेपन को सबसे पहले मोहन राकेश के कहानी संग्रह नए बादल' (जनवरी १९५६) और राजेन्द्र यादव के कहानी संग्रह जहाँ लक्ष्मी कैद है' – (अगस्त १९५६) की भूमिकाओं में रेखांकित किया गया। इन भूमिकाओं में दोनों कथाकारों ने अपनी–अपनी रचना प्रक्रिया को स्पष्ट करने के साथ–साथ नई कहानी समीक्षा के प्रतिमानों की आधारभूमि तैयार की "[२२] नई कहानी के नयेपन के संबंध में कमलेश्वर की राय है कि, ''हमारे पुराने लेखकों ने शाश्वत की खोज में अपने समय और उसकी आंतरिक मांग के प्रति अपने आपको जीवित नहीं रखा''[२३] कमलेश्वर नयी कहानी की पृष्ठभूमि में आगे कहते हैं – "राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, भाई–भतीजावाद, जातिवाद, प्रांतवाद जैसे फोड़े राष्ट्र शरीर में पड़े और चारो ओर मवाद, सड़ते मांस और गंदे खून की महक भर गयी।" [२४] कहानी में मूलत: जीवनानुभव घोषित होने के कारण उसमें बहुत अधिक विश्वसनीयता आ गई। नई कहानी की कथा यात्रा जीवन यात्रा है, नए से नए कफन में ढंकी शवयात्रा नहीं।[२५] वस्तुत: नयी कहानी में समाज और समाज की समस्याएँ व्यक्ति के निजी दृष्टिकोण से आयी है, भोगे हुए या अनुभूत यथार्थ की अभिव्यक्ति है।

नई कहानी परंपरा में राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, धर्मवीर भारती, अमरकान्त, मन्नू भंडारी आदि प्रमुख हैं।

नई कहानी के प्रवर्तक के रूप में राजेन्द्र यादव प्रमुख स्तंभ है। हिन्दी कहानी के विकास मे राजेन्द्र यादव एक महत्वपूर्ण नाम है। हिन्दी कहानी की रूढ रूपात्मकता को तोड़ते हुए नई कहानी के क्षेत्र में जितने कथा प्रयोग उन्होंने किए हैं, उतने किसी और ने नहीं। यादव की कहानियाँ स्वाधीनता के बाद के विघटित हो रहे मानव–मूल्यों, स्त्री–पुरुष संबंधों, बदलती हुई सामाजिक और नैतिक परिस्थितियों तथा पैदा हो रही नई विचारदृष्टि को रेखांकित करती है। उनकी कहानी की व्यक्ति–चेतना सामाजिक चेतना से निरपेक्ष नहीं है। क्योंकि एक अनुभूत सामाजिक यथार्थ ही उनका यथार्थ है यथार्थ बोध के संबंध में उनकी अपनी मान्यता है कि जो कुछ हमारे संवेदना के वृत्त में आ गया है वही हमारा यथार्थ है। लेकिन इस यथार्थ को

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

कलात्मक और प्रामाणिक रूप से प्रेषणीय बनाने के लिए जरूरी है कि हम इसे अपने से हट कर या उठ कर देख सकें उसे माध्यम की तरह इस्तेमाल कर सकें। उनकी 'जहाँ लक्ष्मी कैद हैं. छोटे छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक, 'बिरादरी बाहर आदि उनकी चर्चित कहानियाँ हैं। 'टूटना में पुरुष का अहं और श्रेष्ठत्व का बोध दाम्पत्य जीवन टूटने में मुख्य भूमिका निभाता है। छोटे छोटे ताजमहल' पुराने मूल्यों के द्वन्द्व और नई मानसिकता के निर्माण को व्यथित करने वाली कहानी है। 'जहाँ लक्ष्मी कैद है'में सामाजिक दबाव से पीडित नारी का यथार्थ चित्रण है। 'बिरादरी बाहर' मानसिक द्वंद्व का चित्रण दिखाई देता है। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् महानगरीय परिवेश में संबंध बदले. मूल्य टूटे हैं, दृष्टिकोण बदला है हर चीज को बौद्धिकता से नापा–तोला जाने लगा है। सावित्री नं. २' धर्मवीर भारती, एक ओर जिन्दगी – मोहन राकेश, मिस पाल, खोई हुई दिशाएं कमलेश्वर, डेढ़ इंच ऊपर' निर्मल वर्मा आदि में महानगरीय चित्रण स्पष्ट दिखाई देता है। उसी प्रकार विघटित होते परिवारों तथा आधुनिक अस्तित्व बोध से नारी जीवन में आये बदलाव का चित्रण निर्मल वर्मा की 'परिंदे'. 'तीसरा गवाह', 'डायरी का खेल', मोहन राकेश – 'एक ओर जिन्दगी', कमलेश्वर की 'कमरा और गली', मन्नू भंडारी की 'क्षय', राजेन्द्र यादव की 'प्रतीक्षा', उषा प्रियंवदा की वापसी', 'मछलियां', कृष्णा सोवती की 'बादलों के घेरे', महीप सिंह की 'सीपी' आदि हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पनपी मध्यवर्गीय समाज में उच्च महत्वाकांक्षाओं का चित्रण भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', 'इंद्रजाल', गिरीराज किशोर की गाऊन क्लर्क', राजेन्द्र यादव की 'आत्मा की आवाज', 'टूटना', उषा प्रियंवदा की 'वापसी' आदि कहानियों में यह प्रवृत्ति पायी जाती है। भारत–पाक विभाजन का प्रभाव की परिणती 'शरणदाता', 'मुस्लिम–मुस्लिम भाई भाई. लेटर बाक्स' अज्ञेय जी की, 'मलबे का मालिक' मोहन राकेश की. मेरा वतन', 'अगन अथाह' विष्णु प्रभाकर की, 'अमृतसर आ गया भीष्म साहनी आदि कहानियाँ प्रमुख हैं।

नई कहानी में पारिवारिक स्त्री–पुरुष संबंधों का दायरा सिमट गया है। सदाचार का तावीज' हरिशंकर परसाई 'बांधनेवाले ढोडियों की कलई खुली। इस दौर में मोहन राकेश की 'एक और जिन्दगी', कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया', राजेन्द्र यादव की 'पुराने नाले पर नया फ्लैट', धर्मवीर भारती की 'गुल की बन्नो' और मन्नू भंडारी की 'यही सच है' आदि कहानियों में नारी अस्मिता और नारी चेतना को मार्मिक अभिव्यक्ति मिली।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

'राजा निरबंसिया' में जगपति और चंदा के दांपत्य संबंधों के मूल में आर्थिक कारण सक्रिय है। आर्थिक अभाव और तकलीफों की जमीन पर स्त्री–पुरुष संबंधों का यथार्थ चित्रण है। 'टूटना – राजेन्द्र यादव' में किशोर और लीना के बीच दूसरों द्वारा सौंपे गये भय हैं और इन भयों की बुनियाद आर्थिक कारणों पर पड़ी हुयी है।

''नई कहानी सूक्ष्म तंतुओं पर आघात करती हुई वह संपूर्ण अनुभव से गुजर जाती है।''[२६] उसका उदय ऐतिहासिक संदर्भ में हुआ इसने परिपाटीबद्ध रूढ़ अर्थों में कहानी को स्वीकार नहीं किया। वह एक ऐसा मोड़ था, जो आंतरिक और बाह्य कारणों से हिन्दी कहानी में आया। इसके अंतर्गत कहानी के कार्य तथा कथ्य दोनों स्तरों पर नवीन खोज की गयी।

अंततः ''नई कहानी में वैयक्तिक आक्रोश अजनबीपन, आत्मविसर्जन, यौन, कुण्ठा, समलैंगिक क्रियाओं का उन्माद, भविष्य के प्रति अनास्था आदि की अभिव्यक्ति हुई है।''[२७] नई कहानी के दौर में आंचलिक कहानी का भी महत्व बढ़ा।

आंचलिक कहानी :

नई कहानी आंदोलन के समय ग्रामीण जनजीवन की रीति–संस्कारों को लेकर कहानियाँ लिखी जाने लगी, जिसे 'आंचलिक कहानी' का नाम दिया गया है।

आंचलिक कहानियों में गांवों की नई स्थितियों, आर्थिक विषमताओं, आंचलिक विश्वासों, अंधविश्वासों, उपेक्षित और आंचलिक चरित्रों का यथार्थ चित्रण करने के लिए आंचल को आधार बनाया गया''[२८] स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् अपने अपने परिवेश में शहर और गांव दोनों के संबंध बदले हैं। मूल्य टूटे है, दृष्टियाँ बदली हैं, बौद्धिकता ने अनेक विश्वास तोड़े हैं, और परिस्थितियों में काफी अंतर आ गया है।''[२९] इसका चित्रण आंचलिक कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है, जिनमें फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कंडेय, शिवप्रसाद सिंह, शैलेश मटियानी, नागार्जुन, राजेन्द्र अवस्थी, शेखर जोशी मुख्य हैं।

'तीसरी कसम' में गांव के एक गाड़ीवान की कोमल संवेदना को उभारा गया है। लेखक ने हिराबाई के संपर्क में उभरती हुई हीरामन की सौंदर्य संवेदना के आस–पास गांव को बड़ी आत्मीयता से पुट दिया है। इसी प्रकार 'रसपीरिया' कहानी भी अपनी संवेदना के घनत्व और वैशिष्ट में ही आधुनिक है। उसमें गांव का आधुनिक वातावरण है। 'ठेस' कहानी स्वाभिमान की कहानी है। चाची और मंझली भाभी की

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

कटुक्तियों से आहत सिरचन शीतलपाटी न बनाने की कसम खाता। उसमें संवेदना की बड़ी गहराई और जीवन की सहजता कृत्रिमता, बौद्धिकता से आवृत्त नहीं की गयी है।

साठोत्तरी हिंदी कहानी :–

१९६० तक की कहानी में भी तीखापन, आक्रोश और जीवन के यथार्थ की सही पकड़ नहीं मिल रही थी। इसीलिए नयी कहानी से कट कर ही वह अपनी रचनाधर्मिता को साबित और स्थापित करना चाहता था। उसने यह अनुभव किया कि, नई कहानी जिंदगी और आज के परिवेश की सही अभिव्यक्ति दे पाने में अक्षम हो गई और उसमें कई त्रुटियों का समावेश भी हो गया है। [३०] नई कहानी का प्रभाव निष्प्रभ होते हुए अनेक आंदोलनों ने जन्म लिया. इसमें सचेतन कहानी, अकहानी, समकालीन कहानी, समान्तर कहानी आदि उल्लेखनीय हैं। इन आंदोलनों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

सचेतन कहानी :–

सचेतन कहानी आंदोलन नई कहानी की प्रतिक्रिया में प्रारंभ हुआ। सचेतन कहानी का आंदोलन आधुनिक दृष्टि का आंदोलन है। सचेतन कहानीकार हैं महीपसिंह, मनहर चौहान, सुरेंद्र अरोड़ा, वेद राही, भ्रमर, आनंद प्रकाश जैन, नरेंद्र कोहली, हिमांशु जोशी. योगेश गुप्त। डॉ. महीपसिंह सचेतना की वैचारिकता इस प्रकार प्रकट करते हैं – ''यह एक दृष्टि है जिसमें जीवन जीया जाता है और जाना जाता है। चूंकि मनुष्य की प्रवृत्ति जीवन की ओर भागने की रही है। अत: सचेतना एक सक्रिय जीवनबोध भी है। सचेतन दृ ष्टि मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके अचेतन और अवचेतन अस्तित्व से ढोकर उसके सचेतन रूप तक अपनी भूमिका निभाते हैं।"[३१] ''सचेतन कहानीकारों ने मानवीय संबंधों, मूल्यों को और नगरीय–महानगरीय परिवेश में देखा है। विघटन को लेकर प्राय: उसमें कोई गुस्से का भाव है. न आश्चर्य का। सचेतन कहानी का कथ्य बहुआयामी है। इन कहानियों में उच्च वर्ग वैभव विकास और मानसिकता के समानान्तर निम्न मध्यवर्गीय सोच को रखकर सामाजिक विसंगतियों को उभारती है। उस प्रकार इन कहानीकारों में आधुनिकता आयातीत नहीं लगती. उन्होंने अकेलेपन, आत्मनिर्वासन, अजनबीपन आदि को मूल के रूप में प्रस्तुत किया। [३२] सचेतन कहानी प्रामाणिक यथार्थ और भोगे हुए यथार्थ को प्रकट करती है और आधुनिकता बोध यर्थाथवादिता, प्रामाणिकता का चित्रण करती है। अत: सचेतन आंदोलन अपनी कोई महत्वपूर्ण जड़ नहीं पकड़ पाया और कहानी अग्रसर हुयी।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सचेतन कहानी : कथ्य :–

महीपसिंह की कील यौन सम्बंधों पर आधारित है। कहानी की नायिका मोना' अपने विवाह योग्य वर न मिलने की विवशता में है। आधुनिक परिवारिक स्थिति में एक लड़की का मानसिक द्वन्द्व उभारती है। राजकुमार भ्रमर की कहानी लौ पर रखी हथेली और आनन्द प्रकाश जैन की लिपिस्टिक कहानी में सामाजिक विसंगति को चित्रित किया है। इसी प्रकार मानवीय संबंधों और मूल्यों के विघटन को लेकर लिखी गयी कहानियों में बीस सुबहों के बाद (मनहर चौहान). धुंधले चेहरे' (महीप सिंह) 'बर्फ'(सुरेंद्र अरोडा)आदि में नगरिय या महानगरीय जीवन संदर्भ में पिता–पुत्र , माँ बेटे मित्र रिश्तेदार के संबंधों में होने वाले परिवर्तन को उभारा गया है। अत: स्पष्ट है कि सचेतन कहानी का कथ्य आधुनिक संबंधों पर आधारित है।

अकहानी आंदोलन :–

सन **१९६०** में नई कहानी के बिखराव के कारण यह आंदोलन जड पकडने लगा था। यह आंदोलन पेरिस में जन्मी 'एन्टीस्टोरी' का भारतीय संस्करण माना जाता है । अकहानी शब्द की सार्थकता बतलाते हुए श्याम परमार कहते है – " अ–उपसर्ग निषेधात्मक होने के साथ – साथ पूर्व पीढी से या नई कहानी से साठोत्तरी कहानी को अलग करने का काम भी करता है।"[३३] अकहानीकारों ने अपनी कहानियों में विसंगतिबोध या व्यर्थताबोध कहानी का मुख्य प्रतिपाद्य माना है । अकहानी में संबंधाभाव और संबंधहीनता की स्थितीयाँ विस्तार से कही गई । अकहानी में पुरानी और बूढी पीढी को लेकर बहुत सी कहानियाँ लिखी गई उनका तेवर निर्मम है और मुड उग्र ।"[३४] वस्तुत: नई कहानी से अलग उग्र रूप धारण करके स्त्री–पुरुष संबंध और उनके सेक्स के प्रति रुखापन का चित्रण किया है । विवाह बाह्य सेक्स और देह को पवित्र आत्मा नकारकर भोगवस्तू तक उसे सीमित कर दिया है । अकहानी में पात्र भी नही होते अपिस्तु स्थिती का अमूर्त प्रभाव पैदा करणे के लिये क , ख, ग ,को संकेत रूप में पात्र मान लेते है । अकहानी में शिल्प का सुंदर रूप दिखाई देता है वही फैंटेसी , डायरी , संस्मरण , आत्मप्रलाप आदि विधा की विशेषताएँ भी लिए हुए अकहानी के शिल्प में स्वाभाविकता दिखाई देता है ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

समानान्तर कहानी :–

१९७२ से समानान्तर कहानी का प्रारंभ माना जाता है । कमलेश्वर ने 'समान्तर' पत्रिका के अन्तर्गत और ललित मोहन अवस्थी , कामतानाथ ,इब्राहिम शरीफ ने स्वतंत्र लेख लिखकर इसकी वैचारिकता को स्पष्ट किया । यह आंदोलन मानकर सहचिंतन के लिए खुला मंच है ऐसा राजेन्द्र यादव मानते है । समान्तर कहानी आम आदमी के और साधारण मनुष्य के संघर्ष को नजरअंदाज नहीं करता ,उनके लिए वह लड़ना चाहता है । इस संबंध में कमलेश्वर करते हैं '' इतनी दया, नम्रता, अहिंसा, क्षमा , शांति, उदारता , नीति , समता ,द्वैत ,अपरिग्रह आक्रोश,दान, मैत्री, संकल्प, वचन – कर्म और अनेकांत आदि के विराट और उदात्त महामूल्यों की बात करते हुए हम उन्हें वास्तव में जीवन मूल्य क्यों नहीं बना पाये? और अंततः इन्हें सामाजिक संहिता में क्यों शामिल नहीं कर पाये।"[३५] याने उपस्थित जीवन को त्यागना ही समांतर कहानी का उद्देश्य है । सामंतवाद का विरोध , देशी– विदेशी पूंजीवाद का विरोध, साम्राज्यवाद का विरोध और विदेशी फॉसिस्टवाद का विरोध यह समांतर कहानी में मुखरता से स्पष्ट हुआ है।"[३६] अतः समांतर कहानी मानवीय जीवन को देशकालगत स्थिति को जोड़कर उसे न्याय दिलाना चाहता है और देश की स्थिति से सामान्य जन से जोड़ना चाहती है । स्वच्छंद यौनाचार, अलगांव, दीनताबोध ,आक्रोश ,संघर्ष का स्वर समांतर कहानी की विशेषताए है।

समकालीन कहानी :–

इस आंदोलन के अग्रणी है डॉ.गंगाप्रसाद विमल।डॉ.गोरधन सिंह शेखावत समकालीन कहानी के बारे में कहते है – " समकालीन शब्द वस्तुतः आधुनिकता का लघुरूप है । तथा एक विशिष्ट समय से सम्बंध है । लेकिन समकालीन कहानी में समय और उम्र का उतना महत्व नही है जितना समान दृष्टि का ।"[३७] इस प्रकार की समान जीवन दृष्टि वाले व्यक्ति ही समकालीन कहानीकार कहे जा सकते है । जो समान स्तर पर आज के जीवन की विसंगतीयाँ और संत्रास को झेल रहे है । समकालीन कहानीकार जिन्दगी के बहुत निकट रहकर अनुभव को प्राप्त करता है और उसी का चित्रण करता है ।

साठोत्तरी कहानीकारों को जीवन के परिवेश और स्थितियों के प्रति निर्मम और निस्संग बनाने का कार्य समकालीन कहानीकारों ने किया है । जैसे समकालीन कहानी में जीवन सापेक्ष समस्या , आदर्श की निरुद्देश्यता, मूल्यहीनता और प्रदर्शन ही स्वभाव क्रियाहीन होते मनुष्य का चित्रण है । समकालीन कहानी

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

यह कोई मूल्यगत परिवर्तन नहीं है । केवल समकालीन सोच है वह रूढीवादी परंपरा को तोडना चाहता है ।

निष्कर्ष

हिंदी कहानिका प्रारंभ १९०० में सरस्वती पत्रिका से हुआ

आधुनिक हिंदी कहानी का विकास पश्चिम से हुआ ।

आ.रामचंद्र शुक्ल जी हिंदी की प्रथम कहानी इंदुमती को मानते है ।

इस समय की कहानियाँ आदर्श और निष्ठा का निर्वहन देखा गया है ।

प्रेमचंद पूर्व कहानी साहित्य में कथनात्मकता , घटनात्मकता , कुतूहलता ,औत्सुक्य आदि तत्व पाये जाते है ।

प्रेमचंद युग में ऐतिहासिक , गांधीवादी विचार दृष्टि, मनोमनोवैज्ञानिक , रुपवादी , यथार्थवादी , आदर्शवादी आदि मुख्य कथा प्रवाह है ।

प्रेमचंदजी के कथा साहित्य में देशी–रियासतों की समस्या . मध्यम वर्गीय जीवन , आभूषण प्रेम , पुलिस का दमन , देश की पराधिनता ,छूत अछूत की समस्या , किसानों की समस्या .सूदखोरी की समस्या आदि चित्रित है ।

नई कहानी आंदोलन से राजेद्र यादव , कमलेश्वर , मोहन राकेश ने चलाया और इससे पूर्व की कहानी को पुरानी कहानी कहा।

नई कहानी के बारें में कमलेश्वर लिखते है – हमारे पुराने लेखकोंने शाश्वत की खोज में अपने समय और उसकी आंतरिक मांग के प्रति अपने आपको जीवित नही रखा।[३८]

नई कहानी के कार्य तथा कथा दोनों स्तरों पर नवीन खोज की ।

आंचलिक कहानी में कृत्रिमता बौद्धिकता नही पायी गई।

१९६० के बाद नई कहानी निष्क्रिय हुई ।

सचेतन कहानी कोई महत्त्व पूर्ण जड़ पकड नही पायी ।

अकहानी आंदोलन पेरीस में जन्मे एन्टीस्टोरी का संस्करण माना जाता है ।

समानांतर कहानी १९७२ से कमलेश्वर जी ने शुरू किया ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

समकालीन कहानिकार जीवन को निकट से जीकर अपनी बात करते है स्पष्ट है की हिंदी कहानी साहित्य विभिन्न पडावों से गुजरकर आपना विकास करती है । और आदर्श तथा यथार्थ से शुरू हुई हिंदी कहानी आज मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग बन गयी है ।

संदर्भ :–

डॉ.संत बख्शसिंह – नई कहानी – कथ्य और शिल्प – पृ.२–३
डॉ.रामचंद्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास – पृ. ६०३
डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल – हिन्दी कहानियों की शिल्पविधी का विकास पृ. ५७
वेद प्रकाश शर्मा – कहानी स्वरूप और संवेदना – पृ. २२
शिवदाससिंह चौहान – हिन्दी साहित्य के अस्सी साल –पृ. १९७
डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा – हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन –पृ. ७९
संपा. डॉ.धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोश – पृ. २३७
राजेन्द्र यादव – कहानी स्वरूप और संवेदना – पृ. ११
डॉ.संत बख्शसिंह – नई कहानी नये प्रश्न – पृ. १७
डॉ.गणेशदास : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप – पृ.६५
डॉ.धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोश – (भाग –२)
जितेन्द्र वत्स :–साठोत्तरी हिन्दी कहानी :उपलब्धि और सीमाएँ – पृ.४
जितेन्द्र वत्स :–साठोत्तरी हिन्दी कहानी :उपलब्धि और सीमाएँ – पृ.४
डॉ.श्रीनिवास शर्मा : हिन्दी साहित्य का इतिहास – पृ.४५६
डॉ.उषा गोयल – हिन्दी कहानी चरित्र का विकास पृ.१९६
प्रल्हाद अग्रवाल –हिन्दी कहानी सातवां दशक – पृ. ४
जितेन्द्र वत्स :–साठोत्तरी हिन्दी कहानी :उपलब्धि और सीमाएँ – पृ. ७
नवल किशोर आलोचन अप्रैल १९९६ – पृ. ५७–५८
प्रल्हाद अग्रवाल – हिन्दी कहानी सातवां दशक – पृ. ६
डॉ.रामदरश मिश्र – हिंदी कहानी अंतरंग पहचान पृ. ५२
डॉ.धनंजय वर्मा दृहिन्दी कहानी का रचनाशास्त्र – पृ. १५९
जानकी प्रसाद शर्मा – कहानी का वर्तमान – पृ. १५
कमलेश्वर –नयी कहानी की भूमिका – पृ.२८
कमलेश्वर–नयी कहानी की भूमिका – पृ.२८
डॉ.धनंजय वर्मा दृहिन्दी कहानी का रचनाशास्त्र – पृ. १६१
डॉ.धनंजय वर्मा दृहिन्दी कहानी का रचनाशास्त्र – पृ. १६१
जितेन्द्र वत्स :–साठोत्तरी हिन्दी कहानी :उपलब्धि और सीमाएँ – पृ. १३
जितेन्द्र वत्स :–साठोत्तरी हिन्दी कहानी :उपलब्धि और सीमाएँ – पृ. १०
रामदरश मिश्र – हिंदी कहानी अंतरंग पहचान पृ.६१
जितेन्द्र वत्स :–साठोत्तरी हिन्दी कहानी : उपलब्धि और सीमाएँ – पृ १९
डॉ.महीप सिंह – सचेतन कहानी : रचना और विचार : पृ.१२–१३
डॉ.वेदप्रकाश अभिताभ – हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा – पृ.६०
श्याम परमार : अकविता और कला संदर्भ –पृ.१३
डॉ.वेदप्रकाश अभिताभ – हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा– पृ. ४९
सारिका – १९७५ (अप्रैल) – पृ.९
सारिका – १९७५ (मार्च) – पृ.६२
डॉ.गोरधन सिंह शेखावत : नई कहानी : उपलब्धि और सीमाएँ – पृ ८९
डॉ.वेदप्रकाश अभिताभ – हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा– पृ. १२–१३

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language